

घनानंद

सुजानहित

सवैया-1 :

रूपनिधान सुजान सखी जब तैं इन नैननि नेकु निहारे।

दीठि थकी अनुराग-छकी मति लाज के साज-समाज बिसारे।

एक अचंभौ भयौ घनआनंद हैं नित ही पल-पाट उघारे।

टारैं टरैं नहीं तारे कहुँ सु लगे मनमोहन-मोह के तारे।।

[शब्दार्थ :- रूपनिधान : रूपसौंदर्य, रूपसौंदर्य का भण्डार, अत्यंत रूपवान; सुजान : घनानंद की प्रेयसी, नायिका, सज्जन, ज्ञानी, चतुर, कृष्ण; नेकु निहारे : थोड़ा सा देखा है; दीठि : दृष्टि, नेत्र, चितवन; थकी : चकित, स्तब्ध; अनुराग छकी : प्रेमासक्त, प्रेम में डूबकर; मति : बुद्धि, विवेक; लाज के साज-समाज : लज्जा और संकोच के कारण बंधन, भय, मर्यादा का भाव; बिसारे : विस्मृत हो गए, भूल गई; अचंभौ भयौ: आश्चर्य हुआ; पल पाट : पलक रूपी परदे या दरवाजे; उघारे : खुले या खोलना; टारैं : टालने पर भी; टरैं : टलते नहीं, हटते नहीं, वहीं स्थिर रहते हैं; हित ही : प्रेमपूर्वक; तारे : आँखों की पुतलियाँ, ताले; मनमोहन : मन को मोहनेवाला, लुभावना, प्रिय, प्यारा, श्रीकृष्ण; मोह के तारे : मोह रूपी आँखे।]

सवैया-2 :

आँखि ही मेरी पै चेरी भई लखि फेरी फिरै न सुजान की घेरी।

रूप-छकी, तित ही बिथकी, अब ऐसी अनेरी पत्याति न नेरी।

प्रान लै साथ परी पर-हाथ बिकानी की बानी पै कानि बखेरी।

पायनि पारि लई घनआनंद चायनि, बावरी प्रीति की बेरी।।

[शब्दार्थ :- चेरी : दासी, गुलाम, विवश; भई : हो गई है; लखि : एक बार देखने के उपरांत; फेरी फिरै न : हटाने की चेष्टा करने पर भी वापस नहीं लौटती; सुजान : चतुर, प्रेमी, श्रीकृष्ण; घेरी : प्रेम के घेरे में घिरी; रूप-छकी : सौंदर्य और प्रेम में आकंठ डूबकर तृप्त होनेवाली; तित ही : उधर ही, वहाँ ही; बिथकी : मुग्ध हो गई है, ठहर गई है, थककर विश्राम कर रही है; अनेरी : विलक्षण, विचित्र, विचित्र, अद्भुत; नेरी : निकट के, पास के; पत्याति : विश्वास करती है; त्याति न नेरी : निकट के संबंधियों या मित्रों को नहीं पहचान पाती; पर-हाथ बिकानी : दूसरों के हाथ या प्रेमी पर न्यौछावर, सर्वस्व लुटाने के लिए तत्पर; बानि : प्रृति, स्वभाव, आदत; कानि बखेरी : कुल की मर्यादा त्याग दी है; पायनि : पैरों में; पारि लई : डाल ली है; चायनि : चाव से, उत्साहपूर्वक; प्रीति की बेरी : प्रेम की बेड़ी, प्रेम का बंधन ।]

सवैया-3 :

रूपनिधान सुजान लखें बिन आँखिन दीठि हि पीठी दई है।

ऊखिल ज्यौं खरकै पुतरीन मैं, सूल की मूल सलाक भई है।

ठौर कहूँ न लहै ठहरानि को मूर्दे महा अकुलानि भई है।

बूढ़त ज्यौ घनआनंद सोचि, दई विधि व्याधि असाधि नई है।।

[शब्दार्थ :- रूपनिधान : रूपसौंदर्य, रूपसौंदर्य का भण्डार, अत्यंत रूपवान; सुजान : घनानंद की प्रेयसी, नायिका, सज्जन, ज्ञानी, चतुर, प्रेमी, श्रीकृष्ण; लखें बिन : बिना दर्शन किए; दीठि : दृष्टि, नेत्र, चितवन; पीठि दई है : पीठ दे दी है, साथ छोड़ दिया है, मुँह मोड़ लिया है, आँकों ने दृष्टि को ही पीट दे दी है, दृष्टि ही त्याग दी है, देखने की शक्ति खो दी है; ऊखिल : तिनका, अप्रिय; खरकै : खटकता है, चुभता है, खटकता है; पुतरीन : पुतलियाँ; सूल : काँटा; मूल : नोक; सलाक : शलाका, अंजन या सुरमा लगाने वाली सलाई; ठौर : स्थान, जगह; लहै : प्राप्त होता है; ठहरानि को : ठहरने के, रूकने के, विश्राम करने के; महाअकुलानि : अत्यधिक व्याकुलता; बूढ़त : चिंतन-मनन करना, चिंता के सागर में डूबना; ज्यौ : प्राण, जीव; दई विधि : ब्रह्मा ने दे दिया है; व्याधि : बीमारी, रोग; असाधि : असाध्य, न ठीक होने वाला ।]